ॐ ।। श्री अमरलाल साहबि अष्टक ।। ॐ

ॐ अलख निरंजन, सर्व दुख भंजन -ज्योति स्वरूप बिराज हैं ।
दर्शन देखेश्री अमरलाल के - दुःख दरिद्र सब भाग हैं ।
चैत्र महिना रात थारूँअ - धर रातनराय अवतार हैं ।
श्री लाल उदेरा गुरू हमारा - पूरण ब्रह्म निरंजन हैं ।

१ जय जय उदेरा स्वामी मेरा अंतर्यामी प्रभु तू ही हैं ।
तुझ बिन दीसे और न कोई - सब सृष्टि तेरे आधार हैं ।
धर धर आनन्द मंगल बधाइयां - आनन्द बाजा बाज हैं ।
तीन लोक जयकार तेरो - ब्रह्मा पार न पायो हैं ।

२ तेतीस करोड़ देव देवा - ब्रह्मा विष्णु महेश हैं ।
सब ही करत जय जय सोभा तेरी - आंनद मंगल गाव हैं ।
मृदंग बाजे, दीप जागे - अनहद झिम-झिमकार हैं ।
क्या कुछ उपमा मैं कर सकां तेरी-सोभ्या अपरम्पार हैं ।

३ मोर मुकुट सिर बिरहु बिराजे - छबि कलंगी दा झिमकार हैं ।
अनेक सूरज कोट चन्द्रमा - सोभ्या अति ही विशेष हैं ।
काने कुंडल गले मोतियन माला - हाथ करोले शोभ हैं ।
बांह बहूदें पहुंच कर - परि भूषण कोअति चिमकार हैं ।

४ करत मंजन, लाय चन्दन - अंग अंग सुगन्ध हैं ।
बीरा तंबुल गुलाब मुख पर - मस्तक तिलक रसाल हैं ।
पटक पीताम्बर वस्त्र रचो रुच - बर लाल बानो अंग हैं ।
सृष्टि रचायी भली भाँति कर - जल में ज्योति बिराज हैं ।

५ ज्योति स्वरूप श्री लाल उदेरा - सर्व धट में तेरो वास हैं ।
संत जानके कारज कीने - आनन्द सुख निधान हैं ।
झंगु जहेंजन थान बनाया - चौखंडी चित्र साल हैं ।
तहिं आसन श्री लाल बिराजे - चंवर झूलन चौधार हैं ।

६ श्री लाल साहिब सिर छत्र झूले - पुष्पन अति छविकार हैं ।
चौकुंडे तेरी ज्योति जागे - सब की करत जयकार हैं ।
मुबर तेरे धंटा बाजे - नौबत रिण झिमकार हैं ।
यात्री जो आवन यात्रा - को तांकी यात्रा सफल हैं ।

७ सखर बखर थान बनाया - सीर बहे चोधार हैं ।
ताँको सोभ्या कह न सकूं प्रभु - जाणी त जाणणहार हैं ।
दुष्ट बिनासन, संत उबारन - पतित पावन तेरो नाम हैं ।
तीन लोक जयकार तेरो - निमत हीं सब जात हैं ।

८ जल की सेवा, प्रभु ज्योति का ध्यान - इहु दान मोहे दीजिए ।
जन्म जन्म तेरी भक्ति माँगु - और मनशा ना करुं ।
इहु अष्टक श्री अमर लाल का - पढ़े नित प्रभात हैं ।
चार पदार्थ पावहीं - फिर गर्भ जून न आवहीं ।

९ गर्भ जून जे आवहीं - तां तेरोही दास कहावहीं ।
धर्म अर्थ कामना मोक्ष - ते फल पावहीं ।
जोई को मनशा कर ध्यावे - तहिं सोई फल पावहीं ।
दूध पुत्र धन लक्ष्मी - सब मनोरथ सिध हैं ।

१० निर्धनियां धन देते बहिरु - निपुत्रां पुत्र देत हैं ।
नामरदां को मरद करेंदा - सूरियां नूं नेत्र देत हैं ।
अवगुण मेरे देख न बहिरु - दर्शन दो प्रतिपालजी ।
ठकुर हीरानंद शरण तेरे-श्री उदेरालाल रख चरणादे नाल जी ।

* *

बोलो श्री अमरलाल साहबि की जय

आयोलाल सभई चओ झूलेलाल

लाल जा जाटी चओ झूलेलाल